

तीसरे वर्ग की यथार्थ प्रतिनिधि 'बिंदा महाराज' कहानी

डॉ आदर्श किशोर
सह आचार्य, हिंदी
राजकीय महाविद्यालय, बाड़मेर

हमारी सदियों की सामाजिक बुनावट को देखें तो लगभग एकतरफा रही है जिसमें एक वर्ग को कुछ विशेषाधिकार दे दिए गए। इसी के चलते कभी समाज मातृसत्तात्मक रहा तो कभी पितृसत्तात्मक या यून भी कहा जा सकता है कि इनमें से कोई एक वर्ग सदियों से दूसरे वर्ग की मानसिकता को बंधक बनाने का प्रयत्न करता हुआ समय-समय पर शोषक वर्ग की भूमिका में रहा।

पुरुष और स्त्री इन दोनों वर्गों से अलग एक तीसरा वर्ग है, जिसे थर्ड जेंडर, तृतीय लिंग या ट्रांसजेंडर की संज्ञा दी है। यह वर्ग ना तो पूर्णरूपेण स्त्री है ना ही पुरुष। किन्नर या हिजड़ा कहे जाने वाले वर्ग की अनेक श्रेणियां हैं। जो वास्तविक किन्नर हैं, शारीरिक विकृतियों से भयावह रूप में से प्रभावित है, ग्रस्त है, वह प्रजाति दुर्लभ है इतनी दुर्लभ जैसे कि लाखों में एक। लेकिन शारीरिक भिन्नता, असमानता और आर्थिक असमानता के चलते अनेक भ्रांतियां आज भी समाज में व्याप्त है। कई मामलों में यह सामाजिक मानसिक दबाव की उपज भी रहा है। सामाजिक सक्रियता और भागीदारी विकासात्मक अवसरों की दृष्टि से यह वर्ग पूर्णतया बहिष्कृत या हाशिए पर रहा है। इस वर्ग की संवेदना को समझने की कोशिश में मानवता अभी कोसों दूर खड़ी है। इनकी उपस्थिति परिवेश में कुछ तीज- त्योहारों तो कुछ उत्सवों ठिठोली में ही दिखती हैं।

साहित्य में अनेक धाराएं हैं, अनेक विमर्श है। हिंदी कथा साहित्य में विगत दो दशकों में प्रवृत्तिगत अनेक नए प्रयोग हुए हैं। कहानी और उपन्यास साहित्य में नए सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयाम जुड़ते गए। दलित चेतना प्रखर रूप में कहानी और उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त हुई जिसमें प्रतिरोध का स्वर बलवती दिखाई देता है। मुंशी प्रेमचंद लिखते हैं, "साहित्य में कहानी का स्थान इसलिए ऊंचा है कि वह एक क्षण में ही बिना किसी घुमाव-फिराव के किसी न किसी भाव को प्रकट कर देती है और चाहे थोड़ी ही मात्रा में क्यों ना हो, वह हमारे परिचय का, दूसरों में अपने को देखने का, दूसरों के हर हर्ष या शोक को अपना बना लेने का क्षेत्र बढ़ा देती है।"¹ इसी के समकक्ष आदिवासी जनजीवन पर केन्द्रित कथा साहित्य विपुल मात्रा में रचा गया। अनेक उदीयमान लेखक उक्त समुदायों के उत्पीड़न भरे जीवन के सामाजिक पक्ष को प्रहारक मुद्रा में व्यक्त करते हुए दिखाई देते हैं। दलित चेतनाप्रधान कथा साहित्य में दलित स्त्रियों की अंतरगाथाओं ने अपनी अलग भावभूमि निर्मित की है। आदिवासी कथा साहित्य में वन्य प्रान्तों में बसे जनजातियों से विकास के नाम पर उनकी वन्य भूमि को उनसे छीनने तथा उनके विस्थापन के कारण उत्पन्न दुष्परिणामों की करुण गाथा भारत के वंचित तथा हाशिये पर धकेले गए समाज का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करता है। हाशिये पर के जन समुदायों में किन्नर समुदाय का असंगठित बिखराव भरे जीवन को वर्तमान कथाकारों ने अपनी रचनाओं में चित्रित कर एक नई भावभूमि को आविष्कृत किया है। वर्तमान समय में किन्नर जनजीवन की चुनौतियाँ साहित्य के केंद्र में स्थान पाकर शिष्ट समाज का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। किन्नर कथा साहित्य के उदय से आम लोगों में किन्नरों के प्रति घृणा और अलगाव के व्यवहार में परिवर्तन हुआ है। किन्नर व्यक्तियों के प्रति समाज धीरे-धीरे संवेदनशील हो रहा है। किन्नरों के पक्ष में अनेक गैरसरकारी संगठन और सामाजिक कार्यकर्ता आवाज़ उठा रहे हैं इसके बावजूद वे उपहास और तिरस्कार के पात्र बने हुए हैं, यह मानवता की दृष्टि से चिंता का विषय है। हिंदी कथा साहित्य में कुछ चुनिन्दा लेखकों ने भारत के विभिन्न महानगरों में छोटे छोटे कुनबों में बसे विभिन्न किन्नर समुदायों के जीवन को वास्तविकता के धरातल पर चित्रित करने का प्रयास किया है।

मानव सभ्यता के विकास यात्रा में अनेक पड़ाव आते रहे हैं। भूमंडलीकरण की स्थितियों से प्रभावित और परिवर्तित सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश ने हाशिये पर पड़े किन्नर समुदाय के प्रति समाज में मानवीय संवेदनाओं को जगाया है। समाज में परिवर्तन की इस लहर से समाज में उपेक्षित वर्गों को पहचान मिली और निस्संदेह हिंदी के कुछ चुनिन्दा कथाकारों ने इस आंदोलन को साहित्य की मुख्य धारा में स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी में किन्नर जीवन पर आधारित कथा साहित्य का आरंभ 21 वीं शती में हुआ। विगत शती में स्त्री, दलित और आदिवासी वर्ग को तो विशेष अभिव्यक्ति मिली परंतु किन्नर समाज को हिंदी साहित्य में कोई विशेष अभिव्यक्ति नहीं मिली।

हिंदी में किन्नर समुदाय पर केन्द्रित - यमदीप – 2002 (नीरजा माधव), मैं भी औरत हूँ – 2005 (अनुसूइया त्यागी), किन्नर कथा – 2010 (महेंद्र भीष्म), तीसरी ताली – 2010 (प्रदीप सौरभ), गुलाम मंडी – 2013 (निर्मला भुराड़िया), पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा – 2016 (चित्रा मुद्गल) तथा मैं पायल – 2016 (महेंद्र भीष्म), पंखवाली नाव (पंकज बिष्ट) उपन्यास प्रकाश में आए हैं। ट्रांसजेंडर स्त्री मानोबी बंद्योपाध्याय की बांग्ला से हिंदी में अनूदित आत्मकथा 'पुरुष तन में फंसा मेरा नारी मन' - 2018 (राजपाल प्रकाशन) किन्नर साहित्य में रचित एक मात्र आत्मकथा है। बांग्ला में रचित यह बहुचर्चित आत्मकथा हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी में भी उपलब्ध है।

किन्नर जीवन से संबंधित कहानियों का संग्रह 'थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियाँ' (संपादक – डॉ. एम फिरोज खान) उल्लेखनीय है। इस संग्रह में अठारह कहानियाँ संगृहीत हैं जिनके लेखक क्रमशः शिवप्रसाद सिंह, राही मासूम रज़ा, सलाम बिन राजाक, एस आर हरनोट, कुसुम अंसल, किरण सिंह, कादंबरी मेहरा, डॉ. पद्मा शर्मा, अंजना वर्मा, महेंद्र भीष्म (त्रासदी), ललित शर्मा (रतियावान की चेली), डॉ. लवलेश दत्त (नेग), गरिमा संजय दुबे (पन्ना बा), श्रीकृष्ण सैनी (हिजड़ा), विजेंद्र प्रताप सिंह (संकल्प), चाँद दीपिका (खुश रहो क्लीनिक), पूनम पाठक (किन्नर) और पारस दासोत (गलती जो माफ नहीं) हैं।

हिंदी साहित्य में किन्नर समाज केंद्रित लेखन का प्रारंभ कहानी और उपन्यास विधा से माना जा सकता है। संपादक डॉ. एम फिरोज खान के कहानी का संग्रह 'थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियाँ' में संकलित शिव प्रसाद सिंह की कहानी 'बिंदा महाराज', राही मासूम रजा की कहानी 'खलीक अहमद बुआ', सुभाष अखिल की कहानी 'दरमियाना' और आगे चलकर नीरज माधव कृत उपन्यास 'यमदीप' जैसी गिनी-चुनी रचनाओं से हिंदी में किन्नर विमर्श की नींव पड़ी।

शिवप्रसाद सिंह स्वतंत्रता के बाद और नई कहानी के प्रमुख रचनाकार है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के बाद बदले हुए ग्रामीण परिवेश का यथार्थपरक और नग्न चित्रण उनकी कहानियों में दिखाई देता है। उन्होंने व्यक्ति और समष्टि के विघटनकारी मूल्यों की बारीकियों को पकड़ा ही नहीं बल्कि उसका नकारा भी किया। उन्होंने जब कथा लेखन में प्रवेश किया तब देश औद्योगिकीकरण, पंचवर्षीय योजना आदि तमाम विकासमान मूल्यों की तरफ गतिमान था। गांव का सामाजिक ढांचा टूट रहा था। इस तरीके की स्थिति में गांव का एक बदला हुआ परिदृश्य दिखाई दिया जिसे शिवप्रसाद सिंह ने अपनी कहानी में रूपायित किया। उन्होंने चरित्रों के बाह्य समस्याओं को ही नहीं बल्कि आंतरिक मनःस्थिति को पकड़ने की कोशिश की है। उन्होंने स्वयं कहा है, "मैं इन चरित्रों के बाह्य-आभ्यांतरिक रूपों को ज्यादा आसानी से समझता हूँ।"² बिंदा महाराज आदि उनके अंतर्मन की जीवंत कहानियों के माध्यम से दृष्टव्य है। उनकी कहानी बिंदा महाराज ऐसा ही पात्र है जो बिना किसी अपराध के अनेक सामाजिक समस्याओं का सामना कर रहा है। नई कहानी में परिवेश की विश्वसनीयता, अनुभूति की प्रमाणिकता और अभिव्यक्ति की ईमानदारी का आग्रह था उसका प्रतिरूप शिवप्रसाद सिंह की इस कहानी में दिखाई देता है।

'बिंदा महाराज' कहानी का मुख्य पात्र बिंदा हिजड़ा है। उसके अंदर मानवीय व्यापकता और संवेदनशील हृदय की गहराई है लेकिन स्त्री-पुरुषेतर होने के कारण उसे उपेक्षित जीवन व्यतीत करना पड़ता है। बिंदा महाराज जैसे तमाम स्त्री-पुरुषेतर व्यक्ति इस तरह के उपेक्षित जीवन व्यतीत करते हैं। इन्हें सामान्य जीवन धारा से बिल्कुल अलग करके देखा जाता है। क्या इस तरह के व्यक्तियों की यही नियति है? क्या समाज द्वारा उपेक्षित यह पात्र, अपनी इस स्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार है?

अगर नहीं, तो आखिरकार क्यों वह समाज में सामान्य जीवन जीने का अधिकारी नहीं है? क्यों समाज में अलग-थलग जीवन जीने के लिए मजबूर है? क्या हमारा समाज इतना क्रूर और निर्मम है कि प्रकृति प्रदत्त इस कमजोरी में उस व्यक्ति का साथ देने की जगह उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर करें? जबकि इसमें उस व्यक्ति का कोई दोष नहीं। शिवप्रसाद सिंह कहते हैं कि, "मैं उस उपेक्षित जीवन को भी एक मूल्य देना चाहता था, जिसके अंदर पीड़ा का बोध, मानवीय पीड़ा को भी लांघा जाता है। जो पुरुष नहीं दे पाता, नारी नहीं दे पाती, वही एक हिजड़ा दे जाता है।"³

शिव प्रसाद सिंह की कहानी 'बिंदा महाराज' एक चरित्र प्रधान कहानी है। कहानी एक किन्नर मन की पड़ताल करने में बखूबी कामयाब हुई है। कहानी का नायक बिंदा महाराज हमको बिंदिया कहलवाना पसंद करता है। उसके भीतर ममत्व उमड़ता है किंतु पूर्वाग्रह से ग्रसित समाज उस ममत्व को भी 'डायन' करार देता है। बिंदा महाराज या बिंदिया एक किन्नर है, जिस वजह से वह समाज द्वारा बहिष्कृत होकर अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर है। यही एक वजह है कि बिंदा महाराज या बिंदिया के मन में दीपू मिसिर के बच्चे के प्रति निश्चल प्रेम को भी समाज नहीं स्वीकारता। बच्चे की बीमारी से मृत्यु होने पर समाज को एक अच्छा अवसर मिलता है, बिंदा महाराज को उसकी सामाजिक औकात बतलाने का और यह कार्य उसे 'डायन' की पदवी दे कर करता है। यह हमारे समाज का असली चरित्र है। "यह कहानी अधेड़ हो रहे किन्नर की बहुआयामी विडम्बनाएं लिए है। एक प्राकृतिक श्राप के कारण बिंदा महाराज क्रूर समाज में उपेक्षित और शापित जीवन जीने के लिए विवश है। नई कहानी के दौर की यह बहुचर्चित, बहुसमीक्षित, लोकप्रिय कहानी रही है।"⁴

'बिंदा महाराज' शिव प्रसाद सिंह की चर्चित कहानी है, जिसमें बड़ी ही कलात्मकता के साथ बिंदा महाराज उर्फ बिंदिया के मन की थाह लेने का प्रयास किया गया है। यहां बिंदा महाराज के जीवन की समस्याएं तो उकेरी ही गई हैं पर उनके मनोभावों को प्रकट करने वाले अनेक बिंब भी हैं। "आंखों की कालिमा पर काली छाया, सूखे होठों पर पीला प्रकाश, अस्थिर चित्त की डोलती रोशनी की यह लुका-छिपी। यही जीवन है बिंदा महाराज का। प्यार उसकी आत्मा की प्यास थी, किंतु परिणामहीन प्रेम को समझ नहीं पाता।"⁵ कहानी की ये पंक्तियां महाराज के जीवन सत्य और उनके अंतर्विरोध को स्पष्ट कर देती हैं। मुस्कान का दुपहरिया के फूल की तरह झुलसकर बिखरना बिंब जीवन की जटिलता को पकड़ने का आग्रह है। बिंदा महाराज ताउम्र प्रेम के लिए तरसता है और अंत में उसे प्रेम में छोड़कर चले जाने की पीड़ा से इतना भय लगता है कि वह अकेलापन कमा लेता है। फिर कोई प्रेमिल नजर उसकी परछाई की ओर बढ़ती है तो वह उसमें एक खास दूरी बना लेता है, फिर वह चाहे उसका भतीजा करीमा हो या घुरविनवा। उसके जीवन में मुन्ना का आना और बुआ कहकर पुकारना मन की रेती पर बारिश की फुहारों सा था। पर उसकी मौत का उसके साथ का असर कहकर कलंकित करना उसे भीतर तक तोड़ जाता है। यही कहानी का वह मार्मिक बिंदु है जहां कहानी का कैनवास व्यष्टि समष्टि तक फैल जाता है।

बिंदा महाराज महज एक चरित्र नहीं है जो सदियों की एक ऐसी जटिल संवेदना है जो न्याय और समानता की मांग के साथ हमारे बीच में है। उसके चारों तरफ एक रुग्णता का माहौल भर है। कहानी का पहला ही हिस्सा एक हिजड़े के जीवन की त्रासद कथा को हमारे सामने लाकर पटक देता है- 'मच्छरों से भरे, भीगी-भीगी दीवार वाले घर में चारपाई पर लेटे-लेटे बिंदा महाराज का दिल डूबने लगा था, बतख की तरह उजली धूप देखकर उसे बड़ी राहत मिली। उसने हाथ से धूप छुआ, सिर को छूकर सोचा कि आज बेगानी लगने वाली यह देह उसी की है'⁶ यह भारत में अधेड़ होते किसी भी हिजड़े का आख्यान हो सकता है। शिव प्रसाद सिंह उसके जीवन के इन्हीं विडम्बनाओं की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि - बिंदा महाराज टाट का एक टुकड़ा बिछाकर जब अपने मकान के सामने चबूतरे पर बैठा तो एक पहर दिन चढ़ आया था।'⁷ वृद्धावस्था की यह पीड़ा केवल बिंदा महाराज की नहीं है। जीवन का यह उत्तरार्ध उसके लिए निराशा भरा है। माँ बाप तो प्राणहीन जन्माकर कब के चले गए थे। मर्द होता तो पुरुषत्व का शासन होता, पत्नी और परिवार सहारे के रूप में उसके साथ होते। पर वह तो सृष्टि का अतृप्त कण ही रह गया। सामाजिक विडम्बनाओं की एक बड़ी झलक इसी कहानी के

‘घुरविनवा’ नामक पात्र में दिखाई देती है। घुरविनवा बिंदा महाराज को प्यार करता है। उसके जीवन में चुहल का रंग भरने वाले दीपू मिसिर का प्रभाव भी उसके जीवन से जाता रहा है।⁸

कहानी का विराट संदेश कहानी की बुनावट के अनेक स्तरों में छिपा है। कहानी में न केवल कथानक महत्वपूर्ण कलात्मकता प्रदान करता है, वरन् रचनात्मक संभावना के विभिन्न आयाम भी खोलता है। किन्नर वर्ग की पीड़ा, उसकी संवेदनाओं और समाज के बदलते मिजाज और पूर्वाग्रहों की कलाई भी कहानीकार अनेक आयामों में खोलता है। भावुक क्षणों की बानगी इतनी अधिक है कि अंत में बिंदा महाराज की झुलसती हंसी के साथ ही पाठक को एक चुप सी लग जाती है। पदवी दे कर करता है। यह हमारे समाज का असली चरित्र है।

सन्दर्भ –

1. प्रेमचंद, कुछ विचार
2. शिवप्रसाद सिंह, दस प्रतिनिधि कहानियां, किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 1994, पृष्ठ संख्या.8
3. शिव प्रसाद सिंह, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण - 1995, पृष्ठ संख्या- 51
4. डॉ.मधु संधू, थर्ड जेंडर-समाज और साहित्य, आलेख
5. शिवप्रसाद सिंह, दस प्रतिनिधि कहानियां, किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण- 1994, पृष्ठ संख्या.8
6. बिंदा महाराज, शिवप्रसाद सिंह, थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियाँ, पृष्ठ संख्या. 21
7. बिंदा महाराज, शिवप्रसाद सिंह, थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियाँ, पृष्ठ संख्या. 22
8. बिंदा महाराज, शिवप्रसाद सिंह, थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियाँ, पृष्ठ संख्या. 25
9. बिंदा महाराज, शिवप्रसाद सिंह, थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियाँ, पृष्ठ संख्या. 23